

## अकेली – दुकेली चिरैया

रामदेव धुरंधर

पता - कारोलीन बेल – एर

मॉरिशस

अपने घर – परिवार का अकेला आदमी जागे – जागे पता नहीं कैसे – कैसे नींदनुमा सपनों में अंगड़ाई लेता चला जा रहा था कि उससे सीधा रास्ता एकदम से छूट गया। वह टेढ़े रास्ते में घुस कर पानी से खाली ‘अली बाबा चालीस चोर’ नाम के चट्टानमुमा कुएँ में गिर पड़ा। उसे अभी मरना नहीं था, इसलिए मौत न आ कर उसे केवल चोटें आयीं। चोटों से दर्द तो हुआ, लेकिन न मरने का आनन्द बड़ा होने से उसने चोटों को लॉटरी में आया सुखदायी पैसा मान लिया। अन्यथा मौत टुनटुनाते आती तो उसे दिन में न जाने कैसे – कैसे तारे दिखने लगते। तारे दिखते तो अवश्यमेव वे लाल, हरे और पीले होते। तब तो नीले तारे भी हो सकते थे। मॉरिशस का झंडा इन चार रंगों का ही तो होता है। देशी झंडे को देशव्यापी मानने में एक कड़ी जुड़ जाती ‘अली बाबा चालीस चोर’ नाम के कुएँ में भी अपने देश का झंडा फहर सकता है।

अंधेरे कुएँ में अपनी चोटों गिनने के लिए चिराग न होने से वह कुएँ से बाहर निकलने पर ही चिराग से बहुत बड़े सूर्य के प्रकाश में चोटों को फूँक – फूँक कर गिन पाता। परंतु सवाल यह था कि बाहर आता तो कैसे? एक ही निकल्प हो सकता था, हल्ला बोला। यह एक संदेशा होता, लोगो सुनो, सीधे रास्ते का मुसाफिर टेढ़े रास्ते के चंगुल में फँस गया है। फँसाई का परिणाम यह हुआ कि उलट – पुलट खाते गहरे कुएँ की पेंदी में समा जाने से वह अपनी आवास वाली दुनिया से एकदम दूर पड़ गया है। अब तो उसने हल्ला बोल में पड़ कर अपने गले की बहुत सारी ऊर्जा खत्म कर दी। उसे डर भी लगा अपनी आवाज कहीं खत्म न हो जाए और कुएँ से बाहर किसी आदमी को पता न चले कि कौन कितनी गहराई में फँस कर मिन्नत की आवाज को गेंद के मानिंद ऊपर उछाल रहा है। तो वह क्या समझे, अपनी आवाज से पहाड़ खोदे और चुहिया भी न निकले? इस कष्ट ने उसे कभी के अपने एक होनहार गुरु का स्मरण करवा दिया। गुरु का पढ़ाया हुआ एक पाठ था जीवन की किसी महत्वपूर्ण परीक्षा में सफल होना चाह कर फेल हो जाओ तो भगवान को यहीं कहीं किसी छत में लटका हुआ जान कर उससे पूछ लेना तुम्हारे गले में सफलता की घंटी बांध कर धरती पर भेजता तो क्या उसका कोई घाटा हो जाता?

एक चीज वह बड़े प्यार से मानता, सूखे कुएँ की चट्टाननुमा पेंदी ऐसी थी, संभवतः परलोक का नजारा हो। यहाँ इतने बड़े दुख में फँसे होने के बावजूद उसका मन चंगा होता तो यहीं से किसी विद्वान को सुना कर कहता इस पर कविता लिख कर मुझे देना। श्रम का पैसा तुम्हें मिल जाएगा। अपने सपनों की प्रेयसी को खुश करने के लिए यह कविता मेरे बहुत काम आएगी। पर यह उसे कैसा खयाल आने लगा? प्रत्यक्षता में अपनी जान जा रही है और अपने को सपने की प्रेमिका सूझ रही है। अपने मन – तन और दिमाग को कुएँ की पेंदी में पूरी तरह केन्द्रित करने पर उसकी समझ में आया अपना शोर बाहर न जा कर उसी में लौट रहा है। उसने पहली बार जाना शोर का चरित्र ऐसा भी होता है। अब तक वह केवल उस शोर के चरित्र को जानता था जो किसी के कंठ से मिमियाता सा निकले तो पूरे बाजार में सुन लिया जाता है। कहीं – कहीं तो कुछ न कहा जाए, लेकिन वहाँ शोर का भीमकाय समाँ बंध जाता है। चलता – फिरता मानुस कुछ न सुने, फिर भी रुक कर किसी से पूछे, “तुमने सुना?”

उत्तर मिले, “कुछ भी न सुन कर शायद बहुत कुछ सुना।”

माना कि उसके शोर ने कुएँ में वापस लौटने का चरित्र निभाया, लेकिन फिर भी किसी ने कुएँ की मुंडेर पर पेट के बल पसर कर नीचे झाँकते हुए कहा, “जरूर भीतर का मामला गड़बड़ – तड़बड़ है। एक आदमी हो तो समझूँ कोई गिर गया है। दो आदमी हों तो एक झटके से समझ जाऊँ एक औरत है, एक मर्द है, दोनों को दुनिया का सब से निराला प्रेम निभाना था तो अपने गाँव का यह कुआँ ‘अली बाबा चालीस चोर’ ही उन्हें ऐसे सुनहरे मौके का प्रतिदान कर सकता है। अन्यथा बाहर में तो उन्हें बहुत मुसीबत होती। जाति का प्रश्न उठता और इसके साथ और भी न जाने क्या – क्या उठता। बाप रे बाप, एक प्यार की खातिर इतनी उठायी !”

कुएँ के भीतर के आदमी को ऊपर में किसी के होने और बड़बड़ाने से अपने बच निकलने का इतना विश्वास हुआ कि उसके लिए यह मुहावरा गौण हो गया तिनके का सहारा बहुत होता है। यह सहारा ही हुआ तो मानो पहाड़ जैसा सहारा हुआ। उसे

लगा भगवान ने अपने बहुत सारे काम छोड़ छाड़ कर निचले घाट में गिरे को अपनी घाट वाली गोद में उठा कर ऊपरी घाट लगाने के लिए आकाश घाट से धरती घाट पर आया है।

कुएँ की पेंदी में निष्प्राण सा होता जा रहा आदमी झट – पट अपने दोनों हाथ हिलाने लगा। अंधेरे में हाथ के दर्शन ठीक से तो न हुए, लेकिन मानो हाथों की परछाई के ठीक से दर्शन हो गए। परछाईनुमा दो हाथ होने से ऊपरी आदमी को समझने में सुविधा हुई आदमी एक ही है जो कुएँ में गिरा पड़ा हुआ है। अब आदमी उसे बाहर निकाले तो कैसे? वह हाथ नीचे पहुँचाये और भीतर का आदमी अपना हाथ ऊपर लहराये, तो भी बीच में तमाम हाथों की दूरी बनी रहेगी। सीढ़ी के बारे में सोचा जा सकता था, लेकिन इतनी लंबी सीढ़ी से अपने जीवन काल में मुठभेड़ तो हुई ही नहीं। आदमी रस्सी ला कर नीचे सरसराने के विचार पर पहुँचा। विचार तो गहरे जमा। वह अपने मन को अब तो रस्सी – रस्सी बन डालता। परंतु अड़चन का खाका भी उसके मन में चढ़ा। खींचने वाला तो फिल्मी ऐक्टर ही हो सकता था जो आँखों में धूल झोंकने जैसा कर्तब दिखा कर नीचे के आदमी को ऐसे खींचता कि वह सीधे ऊपरी ऐक्टर के कंधे पर आ समाता। अब पता चलता अरे यह तो लड़की है। ऐसे फिल्मी मसाले को बहुत पचाया गया है और अब भी पचाया ही जाता है।

कुएँ की मुंडेर पर खड़े आदमी ने भीतर के आदमी की आवाज का ठीक से मनन करने पर जाना यह तो अपने पड़ोस का नंदो है। बेचारे पर यह कैसी आफत की बरखा हुई। आदमी कभी - कभी माँ के पेट से जुड़वाँ आता है, लेकिन जाने को तो अकेला ही जाता है। नंदो का आना अकेले का आना था और अब उसका अकेले जाना शाश्वत होता। बच्चा पैदा करना तो दूर, नंदो ने तो शादी भी नहीं की। अपने कुल का अकेला दीपक था, जाता तो दीपक बुझ जाता। नंदो के प्रति सोच में पड़े हुए ऊपर के आदमी ने संसार के कहे को सच होते ही तो देखा। जिसके आगे न नाथ और न पीछे पगहा, यूँ कि पानी पिलाने के लिए अपना सगा कोई न होने से उसे इसी तरह बिन पानी पिये संसार से जाना पड़ता है।

ऊपरी आदमी मृत्यु की इस बात से होते – होते अपने बारे में इस सोच पर पहुँचा संभव हो भगवान ने उसके कलेजे पर बचाने का पुण्य लिखा हो, तभी तो इस रास्ते से अपना कोई मतलब न रखते हुए भी इधर चल निकला था। पुण्य के इस संवेग ने ही उससे पूरी बस्ती में मौखिक ढिंढोरा पिटवाया कि अपने गाँव का नंदो कुएँ में गिर गया है। पानी में डूबे को पतवार चाहिए। बिन पानी का कुआँ है तो इस में गिरे को हाथों, रस्सी, लंबी सीढ़ी, यूँ कि खजूर जैसी लंबाई का सहारा चाहिए। लोग चलें, दौड़ें, देखें, गणित से गणित मिलाएँ, विचार से विचार भिड़ाएँ, जात पात में बँटें हों तो इस जहर को तोड़ें, मन से मन दूर हो तो प्रेम को तार समझ कर तार से तार जोड़ें, बस भावना किसी कोण नंदो को बचाने की हो।

इस आह्वान ने चुंबक का काम किया। लोग उमड़ चले। कहने वाले ने केवल ‘कुआँ’ कहा था, इस कारण बहुत दिशा भ्रम हुआ। कोई इस कुएँ चला, कोई उस कुएँ दौड़ा। मुर्दा घाट की जमीन में भी कुआँ था। फँसियारा गली में तो दो कुएँ थे। लोगों ने कभी गणित न बनाया हो तो अब बना लें, वाह अपने गाँव घाट में इतने सारे कुएँ। सब पानी का मामला है। कुएँ नहीं तो पानी भी नहीं। खैर, नल आ रहे हैं। एक दिन कुएँ इतिहास हो जाएँगे।

शुक्र था दिशा – भ्रम से उबरने में लोगों को अधिक समय नहीं लगा। जो भटके वे ‘अलीबाबा चालीस चोर’ वाली सही जगह पर आ ही गए और जो सही जगह पर पहले से थे वे अटलता से वहाँ जमे हुए तो थे ही। नंदो को बचाने के उपाय में हाथ उछले, सोच में प्रखरता आयी, आँखों ने पट – पट की, पाँवों ने की तो खट – खट ही की। जो लोग यहाँ प्रत्यक्ष थे वे यहाँ से तब तक न टलते जब तक नंदो को कुएँ से बाहर निकाल कर खुशी के मारे उसे गोदा गोदी करने के साथ बाहर के हवा पानी में एकलय न कर दिया जाता। यह तो यहाँ इकट्ठे लोगों का कर्तव्य - बोध और लगे हाथ परेशानी भी हुई। यह कुएँ के आदमी के मृत्यु से जीवन में लौटने के सार तत्त्व पर प्रकाश डालने के लिए काफी था। जो यहाँ नहीं थे नंदो की फँसाई के बारे में सुनने पर वे भी अपने – अपने दिल - दिमाग के द्वार खोल चुके थे। एक औरत हुई जो यहाँ नहीं थी, लेकिन नंदो के कुएँ में गिरने में मानो घर बैठे वह घावों से छलनी हो गयी। औरत का मरद निकम्मा था। व्यथा की मारी औरत ने सूना – सूना एकांतिक और घने अंधेरे में मौका ढूँढ कर नंदो से कहा था अपना हाल कितना बेहाल चल रहा है। नंदो उसके प्रति एक किनारे से पसीजा था और दूसरे किनारे से शारीरिक रिश्ते के लिए मानो अपना सारा दानी पानी उस पर वार दिया था। कोई बात नहीं, खुद भूखा पेट रहे औरत का पेट तो भरे। शारीरिक रिश्ते के बाद औरत जब गर्भवती हुई तो नंदो को लगा खाने के अलावा बच्चे वाली इस पेट भराई में शायद अंश तो अपना ही हो। नंदो उस औरत के यहाँ छिपे – छिपे राशन पहुँचाता था। तब तो नंदो इन दिनों उसका जैसे आधा शरीर था और संपूर्ण प्राण। नंदो की कुएँ वाली विपदा जानने पर औरत ने अपने घर के राशन को गिन कर देख लिया। राशन आज ही खत्म हो रहा था और नंदो आज ही कुएँ में गिर कर शायद उसके राशन पानी और शरीर के प्यार मुहब्बत वाले संसार से जा रहा था। हे भगवान.. !

उधर गाँव के नामी दर्जी हिरनू ने नंदो के कुएँ में समाने की बेहाली सुनी तो उसके अपने लिए मानो चारों ओर खुशियाँ चमचमा उठीं। दर्जी होने से उसके यहाँ दूसरों के कपड़ों का भंडार लगा रहता था, लेकिन वह खुद के कपड़ों में कंगाल था। बहुत बार ऐसा हुआ किसी ने कपड़ा सीने के लिए दिया और कपड़ा ले जाने का दिन आते – आते मर गया। ऐसे मृतकों के कपड़े दर्जी हिरनू के अपने हो जाते थे। पर भूत की आशंका होने से वह उन कपड़ों को पहनने से तोबा करते हुए सस्ते में बेच देता था। जो ग्राहक मरे नहीं और निश्चित होता वे अपने कपड़े ले जाने के लिए दिन गिन रहे हैं हिरनू ने उनसे भी धोखाधड़ी की। महंगे और चटकदार कपड़े हों तो वह चट पट सी देता था और अपनी नाप के किसी ग्राहक के कपड़े पहन कर कहीं शादी में जाते - जाते औरतबाजी के लिए कोठे की दिशा में मुड़ जाता था। वह अपने अंतस से जानता था किसी ग्राहक का कपड़ा पहन कर औरतबाजी के लिए जाना उसका रोग बन गया है। ग्राहक अपने कपड़े के लिए आए तो कोठे में सिकुड़े हुए कपड़े को इस्तरी किये हुए लक दक कपड़े में बदल कर थमा देता था और पैसा वसूल कर लेता था।

नंदो ने एक कमीज़ और दो पतलून दर्जी हिरनू से सिलवायी थी। कुएँ में गिरने के दिन ही तो वह दोपहर को ले जाने के लिए आने वाला था। दर्जी हिरनू के लिए सोने में खास सुगंध यह कि नंदो ने सिलवाने का पैसा अग्रिम दे दिया था। ऐसे में दर्जी हिरनू नंदो के मरने की खबर सुनने पर शराब और कोठे की माताओं के नशे में मन ही मन कैसे न समाता।

नाई कर्मा किसी के बाल काट रहा था कि सुना नंदो कहाँ गिरा पड़ा है। तत्काल उसकी प्रेम भावना बनी नंदो को कुएँ से बाहर निकालने में उसके अपने हाथों का भी मिलन होना चाहिए। बात यह थी कि नंदो न रहे तो नाई कर्मा का बहुत घाटा होता। नंदो जिंदा बच निकले तो मानो नाई कर्मा के लिए वह सोने का अंडा देने वाला मूर्गा हो। नंदो रोज नाई कर्मा के यहाँ दाढ़ी बनवाता था। चवन्नी में दाढ़ी बनती थी तब भी, दस रुपए में बनती है तो अब भी। नाई कर्मा को पूरे दिन में कभी एक ग्राहक मिलता था तो एक यही नंदो। झक मारने की बला में नंदो के आने से नाई कर्मा की सैलून में रौनक आती थी और उसके जाने के बाद कोई ग्राहक न आए तो जैसे अपने आप लिख हो जाए दीपक टिमटिमाने बाद गुल तो हो ही गया।

गाँव के हिन्दू समाज के महा सज्जन नौलखा को नंदो के मरने से खुशी होती। कुछ दिन पहले नंदो और उसके बीच साइकिल की टक्कर हो गयी थी। नंदो का बाल बाँका न हुआ था जब कि नौलखा की नाक टूट गयी थी और पिछवाड़े में खरोंच पड़ने से खून रिसता रह गया था। नंदो को तो बड़ा ही भीषण नास्तिक माना जाता था और नौलखा अपनी सज्जनता से आगे – पीछे यूँ कि अपने आर – पार शरीर से आस्तिक था। दोनों की उस साइकिली टक्कर के दिन से लोगों ने नंदो के बहीखाते में मानो प्यार के वोट डाले और नौलखा को न सुना कर भी मानो सुनाया तुम्हारी सज्जनता झूठी, तुम्हारी पूजा भक्ति सब महा ढोंग। तुम भगवान के सही बंदा होते तो तुम्हारे नहीं, बल्कि नंदो की नाक टूटती और उसके चूतड़ में खरोंच पड़ती।

गाँव की अपनी मुसलमानी कौम में अपनी नेक नीयती का झंडा फहराने वाले मौलाना अफलातून को नंदो के कुएँ से कुएँ में ही रह जाने से बड़ा आघात पहुँचा। आपस में गालियों का आदान – प्रदान करने के लिए उसका सच्चा दोस्त तो एक नंदो ही था। औरतों को कनखियों से देख कह वह नंदो से क्या नहीं कहता था। नंदो मानता था गालियों में वह इतना ताकतवर नहीं है। यह तो मौलाना अफलातून के लिए सर्तिफिकेट हो जाता था। खुशी के मारे वह हा हा ही ही के तेवर से हँसने लगता था।

नंदो के घर के उस पार वाली दुकान के मालिक रामनामी झरिया ने कुएँ में उसके उलटने की कहानी सुनी तो बेईमानी के अपने भगवान की पूजा कर ली। नंदो के जिंदा रहने में उसका दुश्मन जिंदा रहता। उसने कभी नंदो का आधा किलो आटा मारा था। नंदो अब भी आटा – आटा फाटा फाटा गीत में गा कर उसे चिढ़ाता था।

भिखारी जगदास प्रार्थना करता नंदो मरे नहीं। नंदो उसे रोटी देने में उदार था। चौराहे का लावारिस कुत्ता शेरू नंदो के मरने पर उदास हो जाता। नंदो प्रेम से चुटकी बजा कर उसे खुश रखता था।

कुल मिला कर नंदो को किसी के लिए मरना था तो किसी के लिए जीना। इस दृष्टि से वह एक से अनेक था, अकेला तो दुकेला भी।